एक परमात्मा पर निश्चय ने मुझे निश्चिंत किया

जयपुर के 88वर्षीय मदनलाल शर्मा, पेशे से अग्रणी उद्योगपति हैं। उन्हें परमात्मा से मिलने की तीव्र इच्छा बनी रहती थी। ओमशान्ति मीडिया से हुई बातचीत में उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि इस ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले मैं विवेकानन्द का फॉलोअर था। तब मैं इस खोज में लगा रहता था कि विवेकानन्द जैसा कैसे बनें, वो ज्ञान क्या है? फिर सोचता था कि विवेकानंद को याद करूं, रामकृष्ण परमहंस को याद करूं, महाकाली को याद करूं या किसी और को याद करूं? ऐसा द्वन्द्व मन में बना रहता था। ऐसे में 1965 में कलकत्ते में मेरे एक एडवोकेट मित्र ने मुझे कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लगायी गई राजयोग की आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी को देख और समझ कर आओ। वहाँ जाकर मैंने देखा कि वहाँ एक बहन बहुत ही रॉयल तरीके से ज्ञान को स्पष्ट रीति से बता रही हैं। फिर थोड़ा समझकर सेवाकेन्द्र पर ज्ञान का सात दिन का कोर्स किया। तब जाकर मुझे ये स्पष्ट हो गया कि परमात्मा ज्योति स्वरूप है और वो इस धरा पर हम सभी के कल्याणार्थ अवतरित हो चुके हैं।

एक अलौकिक, अद्भुत अनुभव

मैं बिज़नेस के सिलसिले में एक सभा में गया, जहाँ पर निर्वैर भाई जी (ब्रह्माकुमारी संस्थान के महासचिव) ने हमारी क्लास कराई। तब उनके साथ संवाद करने से ज्ञान और स्पष्ट हुआ। उन्होंने बताया कि ज्योतिर्बिंदु बन ज्योतिर्बिंदु परमात्मा बाप को याद करना है। निर्वैर भाई जी से बात होने के बाद क्लियर हो गया कि ये ज्ञान बहुत अच्छा है। तब से मैं इस परिवार का एक सदस्य ही बन गया। 1965 में मैं एक महीने में ही बाबा के पास आ गया, माउंट आबू में। और जब बाबा को देखा तो बाबा को देखते ही ऐसा लगा कि जैसे एक पावर हाउस मेरे सामने है। बाबा बैठे थे, पता ही नहीं चला कि कब मैं एक छोटे बच्चे की तरह बाबा की गोद में चला गया। तब अवस्था ऐसे हो गई जैसे अतीन्द्रिय सुख में मैं डूब रहा हूँ, मुझे बाकी कोई सुधबुध नहीं रही। ऐसा लगा कि एकदम कमाल का है बाबा! बाबा ने ऐसा प्यार दिया कि बस वहीं से मेरे दिल में बस गया कि बस एक बाबा और दूसरा न कोई। इसी निश्चय के कारण युगल सहित सारा परिवार इस बात को सहज ही समझ गया, मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई।

मेरा जन्म 1931 में कलकत्ता में हुआ। नौवीं क्लास में मेरी शादी हो गई थी। शादी के बाद ही मैंने 1957 में एल.एल.बी. की, नौकरी की फिर इसके बाद मैं बिज़नेस में आ गया। मेरे दो बच्चे हैं। और उन बच्चों के भी पोते हैं। तो पोते और बच्चे दोनों अभी सारा बिज़नेस देख रहे हैं। और हमारा परिवार सारा साथ चल रहा है। सारे बिज़नेस की शुरुआत मैंने ही की। हमारा बनियान का बिज़नेस है लेकिन अब मेरे पोते और बच्चे ही उस बिज़नेस को आगे बढ़ा रहे हैं। मेरा पूरा परिवार इस मार्ग में पूर्णतः सहयोगी है और सभी बहुत अच्छे भी हैं। मुझे कभी भी अपने बच्चों को ज़्यादा कहना नहीं पड़ता। एक बार जो कहता हूँ, वो तुरंत ही बड़े प्यार से कर देते हैं, दुबारा कहना ही नहीं पड़ता। इसकी वजह ये है कि मैंने जब इस तरफ गौर किया और देखा कि अगर हमारा जीवन बाबा की श्रीमत अनुसार है तो परिवार और कार्य अपने आप ही अच्छा हो जाता है। परिवार का बहुत बड़ा योगदान रहा। बाबा का बनना माना एक बहुत बड़ी लॉटरी लगना। बाबा ने बिज़नेस के अन्दर भी टॉप पर रखा है। यही तो प्रत्यक्षता है जिसे प्रमाण की ज़रूरत नहीं।

बाबा का साथ सदा छत्रछाया बना

बिज़नेस भी सफलता की ओर जा रहा था और परिवार भी सफलता की ओर बढ़ रहा था। आश्रम में भी मेरा अच्छा पार्ट रहा। कलकत्ते में हो, जयपुर में हो या फिर साऊथ में हो, वहाँ भी सेवा में काफी मेरा सहयोग रहता है। बाबा इस तरह भाग्य भी बनाता रहा और देखता भी रहा।

एक बार बिज़नेस में 1969 में दिक्कत आई थी जिसकी वजह से मैं परेशान था। लेकिन मुझे कुछ भी मांगने की आदत नहीं थी। एक दिन बाबा ने खुद मुझसे पूछा बिज़नेस का क्या हाल है? मैंने कहा बाबा मेरा बिज़नेस तो थोड़ा ऊपर-नीचे हो रहा है। तो बाबा ने कहा कि सर्वशक्तिवान साथ नहीं है? तो मैंने कहा हाँ बाबा, है। इसके बाद मैंने कभी सोचा ही नहीं। फिर उसने ऐसा साथ दिया कि मेरा बिज़नेस अपने आप अच्छा होता चला गया, आगे बढ़ता रहा, कोई दिक्कत नहीं आई। मुझे हर बार ऐसे ही लगता जैसे हर काम बाबा ही कर रहा है, मुझे पता ही नहीं चलता कि वो कब और कैसे करा लेता है! मैं तो बस सोचता हूँ और जो सोचता हूँ वो काम हो जाता है। सब वो ही कर देता है, मुझे सदा बेफिक्र रखता है।

बाबा के शब्द में ज़बरदस्त पावर और प्यार

साकार में ब्रह्मा बाबा जब बच्चे शब्द भी बोलते थे तो उस शब्द में ही इतनी पावर थी कि न्यौछावर हो जाये कोई भी। और ऐसे लगता था कि बाबा अपना है। जीवन में परिक्षाएं बहुत आईं लेकिन मुझे बाबा पर सम्पूर्ण निश्चय रहा। फिर ब्रह्माकुमारीज़ की लाइफ मेरी लाइफ हो गई। मेरे जीवन का पहला उद्देश्य यही रहा। इसीलिए जो भी सेवा का मौका दिया बाबा ने मुझे, कहीं ज़मीन लेनी है, मकान लेना है तो कभी मना नहीं करते थे बोलते थे करो। इसलिए बाबा ने ऐसा भाग्य बनाया कि कलकत्ते में, जयपुर में तीन चार मकान, त्रिपुरा में और अभी जो बड़ा प्रोजेक्ट जयपुर में तीन हज़ार गज में इतना बड़ा 'ओम शांति पीस पैलेस रिट्रीट सेंटर' बनवाने के निमित्त बनाया बाबा ने, ये कमाल है बाबा की! आज मैं सोचता हूँ कि बाबा तो मेरा बहुत ख्याल रखता था। मैंने कितनी बार देखा है कि मैंने जो संकल्प किया वो पूरा हो जाता है। मैं जब सोचता हूँ तो यही लगता है कि बाबा बैक बोन की तरह मेरे साथ है।

परमात्मा के साथ का अनुभव बड़ा ही अद्भुत

2016 में माउण्ट आबू में होने वाली मीटिंग में आकर वापस गया, तो तब मैं बिल्कुल ठीक था। एकदम फिट था। लेकिन कुछ टाइम के बाद मैंने कुछ टेस्ट कराये तो डॉक्टर ने कहा कि कैंसर है। ये सुनकर ना ही मैं विचलित हुआ और ना ही मुझे कोई चिंता हुई। मन में ये आया कि जो होना था सो हो गया। फिर तीन ऑपरेशन हुए। ये कैंसर ऐसा था कि बिल्कुल ही चलना बंद हो जाता है। और जब मुझे पता चला, तब लास्ट स्टेज थी। मेरे बच्चों ने तो कहा कि आप बहुत लेट हो गये। पर मुझे तो मरने की भी चिंता नहीं थी। कैंसर के दौरान भी जैसी मेरी रुटीन थी, उसी अनुरूप मैं राजयोग मेडिटेशन की क्लास कभी मिस नहीं करता था। कभी ये भी नहीं आया दिमाग में कि मरना है या जीना है, कुछ नहीं। मुझे कोई चिंता नहीं थी, बाबा खुश रखता था हमेशा। मेरी छः कीमो हुई थी। मेरी ऐसी हालत तो थी ही, फिर एक साल बाद मुझे चिकनगुनिया, डेंगू हो गया और उसने मेरी ऐसी हालत कर दी कि मेरा चलना-फिरना बिल्कुल बंद सा ही हो गया। ऐसे में कमरे में अकेला होने पर भी मैं कभी किसी से भी मदद नहीं लेता था। अपना कार्य स्वयं ही करता था। ऐसी हालत में भी मैंने व्यायाम और योगासन करना नहीं छोड़ा। ऐसे में शांतिवन के फिजियोथैरेपिस्ट डॉ. श्याम भाई ने मुझसे पूछा कि आप क्या कर रहे हैं? तो मैंने कहा कि बीमार पड़ा हूँ कैंसर से। तो तब उन्होंने मुझे कहा कि आप गाजर का जूस पियो, रागी की रोटी खाओ और हरी सब्जी खाओ, ये ज़रूरी है। इससे आपको आराम मिलेगा। मुझे ऐसा लगा कि जैसे बाबा ने इनको कहा हो कि मैं वो ट्रीटमेंट लूँ। मैं रियलाइज़ करता हूँ कि बाबा ने मेरा पग-पग पर साथ दिया है। कोई भी समस्या आई तो बाबा के आगे खड़ा होता था और जैसे बाबा मुझे साकार में कहते थे वैसे अभी भी गाइड करते हैं। आज जो भी सेवायें हो रही हैं वो बाबा की ही कमाल है। मेरे दिमाग में पूर्ण रूप से निश्चय हो गया कि मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ, बाबा ही करा रहा है सबकुछ।

स्वयं परमात्मा ने कैंसर को क्योर किया

राजयोग मेडिटेशन और एक्सरसाइज़ अभ्यास को बरकरार रखने के कारण ही आज मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैं तो समझता हूँ कि वो बीमारी थी ही नहीं बल्कि मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि मेरा स्वास्थ्य तो परमात्मा ने पहले से भी ठीक कर दिया है। 88 की उम्र में बाबा मुझे ऐसे ठीक रख रहा है वन्डर लग रहा है। उमंग उत्साह हमेशा ही रहता है। कभी कम होता ही नहीं। हमेशा खुशी रहती है। उठते-बैठते, सोते-जागते कोई चिंता ही नहीं। बाबा को धन्यवाद देता हूँ, बाबा की कमाल है। बाबा कहते हैं याद की पॉवर बहुत बड़ा काम करती है। डॉक्टर कहते हैं हमारे बस की बात नहीं थी ये तो ऊपर वाले की कमाल है। सभी हैरान होते हैं कि आप एकदम कैसे ठीक हो गये! कोई कहता है कि आपकी विल पॉवर थी जिससे आप ठीक हो गये। और मैं कहता हूँ कि ये तो बाबा की कमाल है। बाबा ने परिवार को ज्ञान, योग, धारणाओं में सम्पन्न बना दिया। इच्छा मात्रम अविद्या, ऐसी मेरी स्थिति है। इसके लिए बाबा को बहुत-बहुत धन्यवाद। जैसे शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा कम्बाइंड रहते हैं, कम्बाइंड माना ही साथी साथ है, निराकार, साकार दोनों। तो मुझे भी निराकार और साकार दोनों का साथ हर पल अनुभव होता है। साकार में ब्रह्मा बाबा से चार साल जो पालना ली वो मेरे जीवन में बड़ी काम आई। साकार में ऐसे सम्बन्ध रहा जैसे बाप और बच्चे का होता है, रीयल सम्बन्ध। वो बाबा के साथ उठना, बैठना, खाना, पीना, मिलना। एक दफा बाबा ने चिट्ठी लिखी मुझे और दूसरे ही दिन मैं आ गया बाबा के पास। जब बाबा के पास पहुंचा तो वहीं चन्द्रमणि दादी खड़ी थी। बाबा ने कहा था कि बच्चा दौड़ कर आयेगा। तो ये बाबा को नशा था और मुझको बाबा का नशा था। अभी भी मुझे यही लगता है कि जैसे निराकार और साकार बाबा दोनों ही मेरे साथ हैं।

गया-ए.पी. कॉलोनी(विहार)। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर प्रखण्ड कार्यालय फतेपुर में आयोजित कार्यक्रम में मजदूरों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुनीता। कार्यक्रम में उपस्थित रहे जिला समन्वयक शत्रुघन दास, पूर्व विधायक रवीन्द्र प्रसाद, एकता परिषद उपाध्यक्ष प्रदीप प्रियदर्शिनी तथा ब्र.कु. प्रतिमा।

महुआ-विहार। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान सेंट्रल बैंक मैनेजर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दिव्या।

बुलन्दशहर-उ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए एस.एस.पी. एन.कलोंजी, डॉ. ब्र.कु. ओम प्रकाश, ब्र.कु. शीला, क्षेत्रीय निदेशिका, आगरा, ब्र.कु. इंद्रा तथा ब्र.कु. रचना।